मक्का की उन्नतशील प्रजातियाँ

अतिशीघ्र < 75 दिन

संकर 25-30 कु0 / हे0

1. विवेक संकर मक्का-17 (2005)
2. विवेक संकर मक्का-27 (2007)
3. विवेक संकर मक्का-5 (2001)
4. विवेक संकर मक्का-15 (2005)
5. पी0एन0एच0-2 (2006)

20-25 कु0 / हे0

संकुल

1. दायरा- (1984)

जोन - 6,7,8,9

शीघ्र < 85 दिन

संकर 30-35 कु0 / हे0

1. प्रकाश (1997)
2. जे0एच0-3459 (2001)
3. डी0एच0एम0-107 (1993)
4. X-3342 (1998)
5. MMH-133 (1997)

20-25 कु0 / हे0

संकुल

1. पूसा संकुल मक्का-4 (2005)
2. आजाद उत्तम (1991)
3. गौरव (1999)
4. मेघा (1993)
5. सूर्या (1988)
6. किरण (1986)
7. कंचन (1982)

जोन-1,2,3,4,6,7,8,9,सम्पूर्ण उ.प्र.

मध्यम < 95 दिन

संकर 40-45 कु0 / हे0

1. मालवीय संकर मक्का-2 (2007)
2. एच0एम0-4 (2005)
3. बायो-9637 (2008)
4. डी0के0-701 (2003)

20-25 कु0 / हे0

संकुल

1. नवजोत (1983)
2. नवीन (1982)
3. श्वेता (सफेद) (1984)
4. शकि (1997)
(क्यू0पी0एम0)

जोन-1,2,3,4,6,7,8,9,सम्पूर्ण उ.प्र.

देर > 95 दिन

संकर 40-45 कु0 / हे0

1. गंगा-11 (1988)
2. सरताज (1988)
3. बुलन्द (2005)
4. पी0एम0एच0-3 (2008)
5. बायो-9681 (1997)
6. एन0के0-61 (2007)
7. प्रो0-311 (1997)
8. सीडटेक-2324 (2001)
9. एस0एम0एच0-3904 (2009)
10. एच0क्यू0पी0एम0-4 (2010)
11. एच0क्यू0पी0एम0स-5 (2007)
12. एच0क्यू0पी0एम0-1 (2005)

35-40 कु0 / हे0

संकुल

1. प्रभात (1988)

जोन-2,3,5,7,8

मक्का का प्रभावी रूप में एड करना है।

पॉप कॉर्न - बी0एस0 पॉपकार्न, अम्बर, पर्ल, जवाहन प्रभाव प्रजातियाँ।

बेबीकॉर्न - 1. एच0एम0 4 2. वी0एल0 बेबीकार्न-1

मीठी मक्का - माधुरी, विनऔरेंज, प्रिया एच0एस0सी0-1 (संकर)

चारे के लिए - ● आफ्रिकन रास ● जे-1006 ● प्रताप चरी-6

मक्का

खरीफ फसलों में धान के बाद मक्का प्रदेश की मुख्य फसल है। इसकी खेती, दाने/भुट्टे एवं हरे चारे के लिए की जाती है। मक्का के अन्तर्गत कुल क्षेत्रफल, उत्पादन तथा उत्पादकता के गत वर्षों के आंकड़े परिशिष्ट -1 में दिये गये हैं।

इन आंकड़ों से स्पष्ट है कि मक्का के अन्तर्गत अधिकतर क्षेत्रफल वर्षा पर आधारित है, जिसके कारण उत्पादकता कम है। मक्का की अच्छी उपज के लिए आवश्यक है कि समय से बुवाई, निकाई-गुड़ाई खरपतवार नियंत्रण, उर्वरकों की संतुलित प्रयोग, समय से सिंचाई एवं कृषि रक्षा साधनों को अपनाया जाय। संस्तुत सघन पद्धतियां अपनाकर संकर/संकुल प्रजातियों की उपज सरलता से 35-40 कु. प्रति हे0 प्राप्त की जा सकती है। साथ ही अल्प अवधि की फसल होने के कारण बहु फसली खेती के लिए इसका अत्यन्त महत्व है।

सघन पद्धतियां :

1. **भूमि उपयुक्तता :** मक्का की खेती के लिए उत्तम जल निकास वाली बलुई दोमट भूमि उपयुक्त होती है।

2. **खेत की तैयारी :** पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से तथा अन्य दो या तीन जुताइयां देशी हल या कल्टीवेटर या रोटावेटर द्वारा करनी चाहिए।

3. **शुद्ध बीज का प्रयोग :** अच्छी उपज प्राप्त करने हेतु उन्नतिशील प्रजातियों का शुद्ध बीज ही बोना चाहिए। बुवाई के समय एवं क्षेत्र अनुकूलता के अनुसार प्रजाति का चयन करें। विभिन्न क्षेत्रों के लिए संस्तुत प्रजातियों की सूची, विशेषतायें तथा उपज क्षमता निम्न तालिका में दर्शायी गई है :

क्रमांक	प्रजाति का नाम	पकने की अवधि	उपज (कु./हे.)
क)	**संकर**		
1	गंगा-11	100-105	45.50
2	सरताज	100-110	45-50
3	एच.क्यू.पी.एम-5	105-110	50-55
4	दकन-107	90-95	40-45
5	मालवीय संकर मक्का-2	90-95	40-45
6	जे.एच.-3459	80-85	35-40
7	प्रकाश	80-85	35-40
8	पूसा संकर मक्का-5	80-85	35-45
9	विवेक संकर मक्का-27	75-80	25-30
10	शक्ति-1 (QPM) 80-85	80-85	30-35
11	प्रो-316 (4640)	105-110	40-45
12	बायो-9681	105-110	40-45
13	वाई-1402 K	105-110	40-45
14	प्रो-303 (3461)	90-95	40-45
15	केएच-9451	90-95	40-45
16	केएच-510	90-95	40-45
17	एमएमएच-69	90-95	40-45
18	बायो-9637	90-95	40-45

क्रमांक	प्रजाति का नाम	पकने की अवधि	उपज (कु./हे.)
19	बायो-9682	90-95	40-45
20	एमएमएच-113	80-85	35-40
21	एक्स-1123 G(3342)	80-85	35-40
ख)	संकुल		
1	प्रभात	100-110	40-45
2	नवजोत	85-90	35-40
3	पूसा कम्पोजिट-2	85-90	35-40
4	श्वेता सफेद	85-90	35-40
5	नवीन	85-90	35-40
6	आजाद उत्तम	80-85	30-35
7	प्रगति	80-85	30-35
8	गौरव	80-85	30-35
9	कंचन	75-80	25-30
10	सूर्या	75-80	25-30

मक्का की उन्नतशील प्रजातियाँ

4. बुवाई :

(अ) बुवाई का समय : देर से पकने वाली मक्का की बुवाई मध्य मई से मध्य जून तक पलेवा करके करनी चाहिए। जिससे वर्षा प्रारम्भ होने से पहले ही खेत में पौधे भली भांति स्थापित हो जायें और बुवाई के 15 दिन बाद एक निराई भी हो जाय। शीघ्र पकने वाली मक्का की बुवाई जून के अन्त तक कर ली जाय तथा वर्षा के समय वाली 10 जुलाई तक बुवाई कर ली जाय।

(ब) बीजोपचार : बीज बोने से पूर्व यदि शोधित न किया गया हो तो 1 किग्रा0 बीज के थीरम 2.5 ग्राम या 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम से बोने से पहले शोधित कर लें।

(ब) भूमि-शोधन तथा जिंक का प्रयोग : जिन क्षेत्रों में दीमक का प्रकोप होता है वहां आखिरी जुताई पर क्लोरपाइरीफास 20 ई.सी. की 2.5 लीटर मात्रा को 5 लीटर पानी में घोलकर 20 किलोग्राम बालू में मिलाकर प्रति हे. की दर से बुवाई के पहले मिट्टी में मिला दें। जिंक तत्व की कमी के कारण पत्तियों के नस के दोनों और सफेद लम्बी धारियां पड़ जाती हैं। जिन क्षेत्रों में गत वर्ष ऐसे लक्षण दिखाई दिये हों उनमें अन्तिम जुताई के साथ 20 किलोग्राम जिंक सल्फेट प्रति हेक्टेयर की दर से भूमि में मिलाकर बीज बोना चाहिए। इसका प्रयोग फास्फोरस उर्वरक के साथ मिलाकर न किया जाय।

(द) बीज दर : देशी-छोटे दाने वाली प्रजाति के लिए 16-18 किग्रा. संकर के लिए 20-22 किग्रा./हे. एवं संकुल प्रजातियों के लिए 18-20 किग्रा. प्रति हेक्टर।

(य) बुवाई की विधि : बुवाई हल के पीछे कूंड़ों में 3.5 सेमी. की गहराई पर करें। लाइन से लाइन की दूरी अगेती किस्मों में 45 सेमी. तथा मध्यम एवं देर से पकने वाली प्रजातियों में 60 सेमी. होनी चाहिए। इसी प्रकार अगेती किस्मों में पौधे से पौधे की दूरी 20 सेमी. तथा मध्यम एवं देर से पकने वाली प्रजातियों में 25 सेमी. होनी चाहिए।

5. निराई, खरपतवार नियंत्रण :

मक्का की खेती में निराई-गुड़ाई का अधिक महत्व है। निराई-गुड़ाई द्वारा खरपतवार नियंत्रण के साथ ही आक्सीजन का संचार होता है जिससे वह दूर तक फैल कर भोज्य पदार्थ को एकत्र कर पौधों को देती है। पहली निराई जमाव के 15 दिन बाद कर देना चाहिए और दूसरी निराई 35-40 दिन बाद करनी चाहिए।

मक्का में खरपतवारों को नष्ट करने के लिए :

1) एट्राजीन 2 किग्रा. प्रति हे. अथवा 800 ग्राम प्रति एकड़ मध्यम से भारी मृदाओं में तथा 1.25 किग्रा. प्रति हे. अथवा 500 ग्राम प्रति एकड़ हल्की मृदओं में बुवाई के तुरन्त 2 दिनों में 500 लीटर / हे. अथवा 200 लीटर / एकड़ पानी में मिलाकर स्प्रे करना चाहिए।

   इस शाकनाशी के प्रयोग से एकवर्षीय घासकुल एवं चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार बहुत ही प्रभावी रूप से नियमित हो जाते है। इस रसायन द्वारा विशेषरूप से पथरचटा (ट्राइरगन्थिया) भी नष्ट हो जाता है।

2) जहॉ पर पथरचटा की समस्या नहीं है वहॉ पर लासो 50 ई.सी. (एलाक्लोर) 5 लीटर प्रति हेक्टर अथवा 2 लीटर प्रति एकड़ बुवाई के दो दिनों के अन्दर प्रयोग करना आवश्यक है।

3) हार्डी खरपतवारों जैसे कि वन पट्टा (ब्रेचेरिया रेप्टान्स), रसभरी (कोमेलिया वैफलेन्सिस) को नियन्त्रित करने हेतु बुवाई के दो दिनों के अन्दर एट्राटाफ 600 ग्राम प्रति एकड़ + स्टाम्प 30 ई.सी. या ट्रेफ्लान 48 ई.सी. (ट्राइफ्लूरेलिन) प्रत्येक 1 लीटर प्रति एकड़ अच्छी तरह से मिलाकर 200 लीटर पानी के साथ प्रयोग करने पर आशातीत परिणाम आते है।

6. उर्वरकों का संतुलित प्रयोग :

(अ) मात्रा : मक्का की भरपूर उपज लेने के लिए संतुलित उर्वरकों का प्रयोग आवश्यक है। अतः कृषकों को मृदा परीक्षण के आधार पर उर्वरकों का प्रयोग करना चाहिए। यदि किसी कारणवंश मृदा परीक्षण न हुआ हो तो देर से पकने वाली संकर एवं संकुल प्रजातियों के लिए क्रमशः 120:60:60 व शीघ्र पकने वाली प्रजातियों के लिए 100:60:40 तथा देशी प्रजातियों के लिए 80:40:40 किग्रा. नत्रजन, फास्फोरस तथा पोटाश प्रति हेक्टर प्रयोग करना चाहिए। गोबर की खाद 10 टन प्रति हे. प्रयोग करने पर 25 : नत्रजन की मात्रा कम कर देनी चाहिए।

(ब) विधि : बुवाई के समय एक चौथाई नत्रजन, पूर्ण फास्फोरस तथा पोटाश कूड़ों में बीज के नीचे डालना चाहिए। अवशेष नत्रजन तीन बार में बराबर-2 मात्रा में टापड्रेसिंग के रूप में करें। पहली टापड्रेसिंग बोने के 25-30 दिन बाद (निराई के तुरन्त बाद) दूसरी नर मंजरी निकलते समय करें एवं तीसरी नर मंजरी से आधा पराग गिरने के बाद अवस्था संकर मक्का में बुवाई के 50-60 दिन बाद एवं संकुल में 45-50 दिन बाद आती हैं।

7. जल प्रबन्धन : पौधों को प्रारम्भिक अवस्था तथा सिल्किंग से दाना पड़ने की अवस्था पर पर्याप्त नमी आवश्यक है। अतः यदि वर्षा न हो रही हो तो आवश्यकतानुसार सिंचाई अवश्य करना चाहिए। सिल्किग के समय पानी न मिलने पर दाने कम बनते है, वर्षा के बाद खेत से पानी के निकास का अच्छा प्रबन्ध होना चाहिए, अन्यथा पौधे पीले पड़ जाते हैं और उनकी बाढ़ रूक जाती है।

8. अन्य आवश्यक क्रियायें : वर्षा के पानी और तेज हवा से फसल को बचाने के लिए पौधों की जडों पर मिट्टी पलटने वाले हल से मिट्टी चढ़ा देनी चाहिए।

9. फसल की रखवाली : कौओं, चिड़ियों तथा जानवरों से फसल की रक्षा हेतु रखवाली आवश्यक हैं।

10. कटाई-मड़ाई : फसल पकने पर भुट्टों को ढंकने वाली पत्तियां जब 75ः झड़ जाएं तब पीली पड़ने लगती हैं। इस अवस्था पर कटाई करनी चाहिए। भुट्टों की तुड़ाई करके उसके पत्ती को छीलकर धूप में सुखाकर हाथ या मशीन द्वारा दाना निकाल देना चाहिए।

11. फसल सुरक्षा :

(अ) कीट :

1. तना छेदक कीट : आर्थिक क्षति स्तर - 10 प्रतिशत मृत गोभ।

पहचान एवं हानि की प्रकृति - पूर्ण विकसित सूंड़ी 20-25 मिमी. लम्बी, गन्दे भूरे सफेद रंग की होती है। इसका सिर काला होता है तथा शरीर पर चार भूरी धारियॉ पाई जाती है। इसका प्रौढ़ पीले भूरे रंग का होता है।

इस कीट की सूड़ियॉ तनों में छेद करके अन्दर ही अन्दर खाती रहती हैं। फसल के प्रारम्भिक अवस्था में प्रकोप के फलस्वरूप मृतगोभ बनता है परन्तु बाद की अवस्था में प्रकोप होने पर पौधे कमजोर हो जाते है, भुट्टे छोटे आते हैं तथा हवा चलने पर पौधा बीच से टूट जाता है।

2. **प्ररोह मक्खी : आर्थिक क्षति स्तर -** 10 प्रकोपित मृत गोभ।

पहचान एवं हानि की प्रकृति - यह घरेलू मक्खी से छोटे आकार की होती है जिसकी सूंड़ी जमाव के प्रारम्भ होते ही फसल को हानि पहुॅचाती है। हानि के फलस्वरूप मृतगोभ बनता है।

3. **पत्ती लपेटक कीट :**

पहचान एवं हानि की प्रकृति - इस कीट की सूंड़ी हल्के पीले रंग की होती है जो पत्तियों के दोनों किनारों को रेशम जैसे सूत से लपेट कर अन्दर ही रहती है तथा अन्दर से हरे पदार्थ को खुरचकर खाती है।

4. **कमला कीट :**

पहचान एवं हानि की प्रकृति - सूड़ियां 40-45 मिमी. लम्बी होती है। इनका शरीर घने भूरे रंग के बालों से ढका रहता है। इस कीट की सूड़ियां पत्तियों को खाकर काफी नुकसान पहुॅचाती है।

5. **माहू :**

पहचान एवं हानि की प्रकृति - हरी टागों वाली गहरे भूरे या पीले रंग वाली पंखहीन एवं पंखयुक्त गोभ, हरे भुट्टों एवं पत्तियों से रसचूस कर हानि करती है। प्रत्येक मादा 1-5 शिशु/दिन की दर से 10-25 दिन में 24-47 शिशु पैदा करती है।

6. **छाले वाला भृग :**

पहचान एवं हानि की प्रकृति - मध्यम आकार की 125-25 सेमी. लम्बी चमकीले नीले, हरे, काले या भूरे रंग की होती है। छेड़ने पर ये अपने फीमर के अन्तिम छोर से कैन्थ्रेडिन युक्त एक तरल पदार्थ निकालती है जिस के त्वचा पर लगने से छाले पड़ जाते हैं। इनके प्रौढ़ फूलों एवं पत्तियों को खाकर नुकसान पहुचाते है इनकी सूड़ियां का विकास टिड्डे एवं मधुमक्खियों के अण्डों पर होता है।

एकीकृत प्रबन्धन :

- खेत में पड़े पुराने खरपतवार एवं अवशेषों को नष्ट करना चाहिए।
- इमिडाक्लोप्रिड 6 मिली./किग्रा. बीज दर से बीज शोधन करना चाहिए।
- संतुलित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग करना चाहिए।
- प्ररोह मक्खी : प्रभावी क्षेत्रों में 20 प्रतिशत बीज दर को बढ़ा कर बुवाई करना चाहिए।
- प्ररोह मक्खी : प्रभावित क्षेत्रों में बुवाई मानसून आने के 10-15 दिन बाद करना चाहिए।
- सप्ताह के अन्तराल पर फसल का निरीक्षण करना चाहिए।
- मृतगोभ दिखाई देते ही प्रकोपित पौधों को भी उखाड़ कर नष्ट कर देना चाहिए।
- प्ररोह मक्खी : प्रभावित क्षेत्रों में 10-12/हे. की दर से पालीथीन मछली प्रपंच लटकाना चाहिए।
- प्रारम्भिक अवस्था में कमला कीट की झुण्ड में पाई जाने वाली गिडारों को सावधानी से पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए।
- तना छेदक एवं पत्ती लपेटक कीटों के लिए ट्राइकोग्रामा परजीवी 50000 प्रति हे. की दर से अंकुरण के 8 दिन बाद 5-6 दिन के अन्तराल पर 4-5 बार खेत में अवमुक्त करना चाहिए।
- माहू के प्रकोप की दशा में काइसोपर्ला कैरेनीकार्निया को 50000/हे. की दर से सप्ताह के अन्तराल पर अवमुक्त करना चाहिए।
- भण्डारण भुट्टों से दाने निकाल कर ही करना चाहिए।

रासायनिक प्रबन्धन हेतु (मक्का)

कीट (उपचार)

1. दीमक
   - खड़ी फसल में प्रकोप होने पर सिंचाई के पानी के साथ क्लोरपाइरीफास 20 प्रतिशत ई0सी0 2.5 ली0 प्रति हे0 की दर से प्रयोग करें।
2. सूत्रकृमि
   - रसायनिक नियंत्रण हेतु बुवाई से एक सप्ताह पूर्व खेत में 10 किग्रा0 फोरेट 10 जी फैलाकर मिला दें।
3. तना छेदक कीट
   - निम्नलिखित रसायन में से किसी एक रसायन को प्रति हे0 बुरकाव/500-600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिये।
   - कार्बोफ्यूरान 3 जी 20 कि.ग्रा. अथवा फोरेट 10 प्रतिशत सी0जी0 20 किग्रा0 अथवा डाईमेथोएट 30 प्रतिशत ई0सी0 1.0 ली0 प्रति हे0 अथवा क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 1.50 लीटर
4. प्ररोह मक्खी
   - निम्नलिखित रसायन में से किसी एक रसायन को प्रति हे0 बुरकाव/500-600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिये।
   - कार्बोफ्यूरान 3 जी 20 कि.ग्रा. अथवा फोरेट 10 प्रतिशत सी0जी0 20 किग्रा0 अथवा डाईमेथोएट 30 प्रतिशत ई0सी0 1.0 ली0 प्रति हे0 अथवा क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 1.50 लीटर

रोग-

1. तुलासिता रोग :- निम्निलिखित रसायन में से किसी एक रसायन को प्रति हे0 बुरकाव/500-600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिये।

   जिरम 80 प्रतिशत डब्लू0पी0 2.0 किग्रा0 अथवा जिनेब 75 प्रतिशत डब्लू0पी0 2.0 किग्रा0 अथवा मैंकोजेब 75 प्रतिशत डब्लू0पी0 2.0 किग्रा0
2. पत्तियों का झुलसा रोग :- निम्निलिखित रसायन में से किसी एक रसायन को प्रति हे0 बुरकाव/500-600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिये।

   जिरम 80 प्रतिशत डब्लू0पी0 2.0 किग्रा0 अथवा जिनेब 75 प्रतिशत डब्लू0पी0 2.0 किग्रा0 अथवा मैंकोजेब 75 प्रतिशत डब्लू0पी0 2.0 किग्रा0
3. गुलाबी उकठा रोग :- निम्नलिखित रसायन में से किसी एक रसायन को प्रति हे0 बुरकाव/500-600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिये।

   जिरम 80 प्रतिशत डब्लू0पी0 2.0 किग्रा0 अथवा जिनेब 75 प्रतिशत डब्लू0पी0 2.0 किग्रा0 अथवा मैंकोजेब 75 प्रतिशत डब्लू0पी0 2.0 किग्रा0

(ब) रोग :

7. तुलासिता रोग :

   पहचान : इस रोग में पत्तियों पर पीली धारियां पड़ जाती है। पत्तियों के नीचे की सतह पर सफेद रूई के समान फफूंदी दिखाई देती हैं। ये धब्बे बाद में गहरे अथवा लाल भूरे पड़ जाते है। रोगी पौधों में भुट्टे कम बनते हैं। या बनते ही नहीं हैं। रोगी पौधे बौने एवं झाड़ीनुमा हो जाते हैं।

   उपचार : इनकी रोकथाम हेतु जिंक मैंगनीज कार्बमेट या जीरम 80 प्रतिशत 2 किलोग्राम अथवा जीरम 27 प्रतिशत के 3 ली0 हे0 की दर से छिड़काव आवश्यक पानी की मात्रा में घोलकर करना चाहिए।

8. पत्तियों का झुलसा रोग :

पहचान : इस रोग में पत्तियों पर बड़े लम्बे अथवा कुछ अण्डाकार भूरे रंग के धब्बे पड़ जाते हैं। रोग के उग्र होने पर पत्तियां झुलस कर सूख जाती हैं।

उपचार : इसकी रोकथाम हेतु जिनेब या जिंक मैगनीज कार्बमेट 2 किलोग्राम अथवा जीरम 80 प्रतिशत 2 ली0 अथवा जीरम 27 प्रतिशत 3 ली0 हे0 की दर से छिड़काव करना चाहिए।

9. सूत्रकृमि :

उपचार : सूत्र कृमियों की रोकथाम के लिए गर्मी की गहरी जुताई करें एवं बुवाई के एक सप्ताह पूर्व खेत में 10 किग्रा. फोरट 10 जी. फैलाकर मिला दें।

तना सड़न :

पहचान : यह रोग अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में लगता हैं इसमें तने की पोरियों पर जलीय धब्बे दिखाई देते हैं जो शीध्र ही सड़ने लगते हैं और उससे दुर्गन्ध आती हैं। पत्तियां पीली पड़कर सूख जाती हैं।

उपचार : रोग दिखाई देने पर 15 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लीन अथवा 60 ग्राम एग्रीमाइसीन तथा 500 ग्राम कापर आक्सीक्लोराइड प्रति हे0 की दर से छिड़काव करने से अधिक लाभ होता हैं।

मुख्य बिन्दु (इम्पैक्ट प्वाइन्ट्स) :

1. जून के प्रथम पक्ष तथा पलेवा करके बुवाई करें।
2. मक्का की बुवाई मेड़ों पर करें।
3. क्षेत्र विशेष के लिये संस्तुत उन्नतशील प्रजातियाँ/संकुल/संकर का शोधित बीज प्रयोग करें।
4. विरलीकरण (थिनिंग) द्वारा पौधों की निर्धारित दूरी/संख्या सुनिश्चित कर लें।
5. मृदा परीक्षण के आधार पर उर्वरकों का संतुलित प्रयोग किया जाये।
6. जिंक तत्व की कमी के क्षेत्रों में अन्तिम जुताई के समय 20 किलोग्राम प्रति हे0 की दर से जिंक सल्फेट भूमि में मिलाकर बोया जाये।
7. खरपतवारों को नष्ट करने के लिए सीमाजिन/एट्राजिन रसायनों का प्रयोग संस्तुति के आधार पर किया जाय।
8. फसल में लगने वाले कीट/रोगों की सामयिक रोकथाम की जाय।
9. भुट्टे को ढकने वाली पत्तियां 75% पीली होने पर तुड़ाई/कटाई करें। पीला होने पर फसल की कटाई करें।
10. बीज नजदीकी सरकारी संस्था अथवा विश्वसनीय संस्था से क्रय करें।